

## Padma Shri



### SHRI KAAJEE SINGH 'VIDYAARTHEE'

Shri Kaajee Singh 'Vidyaarthee' is the founder chairman of his folk institution, Samskriti Samrakshan Samsthaan in Kalimpong. He started this institution to preserve and promote the Folk cultural music and also the Indian Classical Music simultaneously. Shri Singh is widely known for his role in pioneering the prime instrument Shree Maadal for the growth of Indian Gorkha community. Shri Singh is a retired Music teacher of the renowned school Tashi Namgyal Academy, Gangtok, Sikkim.

2. Born on 25<sup>th</sup> July, 1945, son of "Maadalaacharya" Late Shri Indrajeet Singh Sardaar and mother Smt. Mohanphui Singh, Shri Singh belongs to the Traditional Classic form of Folk Music family, carrying out the lineage since three generations from the Queen of Hills Darjeeling, West Bengal, India. He had a very keen interest in Folk Culture and Music since his childhood as both his paternal and maternal family used to practice the culture. He first started his career from dance, the traditional 'Maaruni Naach' in the year 1952. As he grew up, he discontinued 'Maaruni Naach' and started singing 'Maadaleygeet' and also developed his skill in playing 'Shree Maadal', which he learned from his father, and carried on with the same. His father was one of the pioneers of Shree Maadal in the community.

3. Shri Singh was also serving as an established cine musician (Maadal Player) in Mumbai working with stalwart Music Directors like Laxmikant Pyarelal, Kalyan ji Anand ji, Ram Laxman, Shankar-Jaikishan, Ajay Swamy, for 10 years. He is the first person to create the "Notation System" of this Instrument 'Shree Maadal' and also the Traditional Folk Song "Maadaleygeet". He managed to put everything in format so that it would sound more musical, practical and also disciplined. In the year 1967, he began his research in Shree Maadal and after his rigorous field work of eight years he was successful in publishing his first book named "Maadal" in April 1974.

4. Shri Singh has written 6 books on the prime instrument 'Shree Maadal' and Indian Classical music. He has created 8 Chhanda's. The Chhanda's do not exist in the Chhanda Shaastra of Maharishi Panini. This is an incredible contribution to Chhanda's in the history of India till date. He has self-composed Raagas which does not exist in the Indian Classical Music. This is an incredible contribution to Indian Classical Music. Shri Singh has also created a 14 beat Taal in Shree Maadal. He has created a Taal named "Deodeep" of 14 matra (beats), which never existed in the history of Shree Maadal Taal systems. He has also created two Taals which is indeed a spectacular composition in the field of Indian Classical Music.

5. Shri Singh received a number of awards viz felicitated by Eastern Zonal Cultural Centre(EZCC) in the year 1995& 1997 in Kolkata, West Bengal, Tourism Department in the year 1971 by the Department of Tourism, Darjeeling, West Bengal, felicitated by Department of Culture in the year 1976, Songs and Drama Unit, Darjeeling, West Bengal. He has also felicitated by Pashupati Kala Mandir, New Delhi in the year 1985. Shri Singh has also felicitated by State Pollution Board in the year 2004 by the State Pollution Board, Government of Sikkim. Felicitated by Department of Cultural Affairs in the year 1982 by the Department of Cultural Affairs, Mumbai, Maharashtra. Felicitated by Sikkim Sahitya Parishad in the year 1998. He has also felicitated by Sikkim Kalakar Sangha in the year 2005 and Master Mitrasen Thapa Puraskaar in the year 2019 by

## पद्म श्री



### श्री काजी सिंह 'विद्यार्थी'

श्री काजी सिंह 'विद्यार्थी' कलिम्पोंग में अपने लोक संस्थान, संस्कृति संरक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष हैं। उन्होंने लोक सांस्कृतिक संगीत और भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए इस संस्थान की शुरुआत की थी। श्री सिंह भारतीय गोरखा समुदाय के विकास के लिए प्रमुख साधन श्री मादल को अग्रणी बनाने में अपनी भूमिका के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं। श्री सिंह प्रसिद्ध स्कूल ताशी नामग्याल अकादमी, गंगटोक, सिक्किम के सेवानिवृत्त संगीत शिक्षक हैं।

2. 25 जुलाई, 1945 को जन्मे, "मादलाचार्य" स्वर्गीय श्री इंद्रजीत सिंह सरदार और माता श्रीमती मोहनफुई सिंह के पुत्र, श्री सिंह लोक संगीत परिवार के पारंपरिक शास्त्रीय रूप से संबंधित हैं, जो भारत में पश्चिम बंगाल की पहाड़ियों की रानी दार्जिलिंग से तीन पीढ़ियों से इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। उनकी बचपन से ही लोक संस्कृति और संगीत में बहुत गहरी रुचि थी क्योंकि उनके पैतृक और मातृ परिवार दोनों की ही संस्कृति में रुचि थी। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत सबसे पहले 1952 में पारंपरिक 'मारुनी नाच' से की थी। बड़े होने पर उन्होंने 'मारुनी नाच' का अभ्यास बंद कर दिया और 'मदलेगीत' गाना शुरू कर दिया और 'श्री मादल' बजाने में अपना कौशल भी विकसित किया, जिसे उन्होंने अपने पिता से सीखा, और उसी के साथ आगे बढ़े। उनके पिता समुदाय में श्री मादल के प्रथम अन्वेषकों में से एक थे।

3. श्री सिंह मुंबई में एक प्रसिद्ध सिने संगीतकार (मादल प्लेयर) के रूप में कार्य कर रहे थे। उन्होंने प्रतिष्ठित संगीत निर्देशकों जैसे लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, कल्याण जी आनंद जी, राम लक्ष्मण, शंकर-जयकिशन, अजय स्वामी जैसे दिग्गज संगीत निर्देशकों के साथ 10 वर्षों तक काम किया। वह इस वाद्य यंत्र 'श्री मादल' के "नोटेशन सिस्टम" और पारंपरिक लोक गीत "मादलेगीत" बनाने वाले पहले व्यक्ति हैं। वह सब कुछ फॉर्मेट में रखने में कामयाब रहे, जिससे सब अधिक संगीतमय, व्यावहारिक और अनुशासित भी लगे। वर्ष 1967 में, उन्होंने श्री मादल में अपना शोध शुरू किया और क्षेत्र में आठ साल के कठोर परिश्रम के बाद वर्ष अप्रैल 1974 में "मादल" नामक अपनी पहली पुस्तक प्रकाशित करने में सफल रहे।

4. श्री सिंह ने प्रमुख वाद्य यंत्र 'श्री मादल' और भारतीय शास्त्रीय संगीत पर 6 पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने 8 छंद बनाए हैं। महर्षि पाणिनि के छंद शास्त्र में छंद का अस्तित्व नहीं है। यह भारत के इतिहास में छंद में एक अविश्वसनीय योगदान है। उन्होंने स्वयं रचित राग बनाए हैं जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में मौजूद नहीं हैं। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक अविश्वसनीय योगदान है। श्री सिंह ने श्री मादल में 14 बीट ताल को भी सृजित किया। उन्होंने 14 मात्रा (बीट्स) का "देवदीप" नामक एक ताल बनाया है, जो श्री मादल ताल प्रणालियों के इतिहास में कभी मौजूद नहीं था। उन्होंने दो ताल भी बनाए हैं जो वास्तव में भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में एक शानदार रचना है।

5. श्री सिंह को वर्ष 1995 और 1997 में पूर्वी आंचलिक सांस्कृतिक केंद्र (ईजेडसीसी) और कोलकाता, पश्चिम बंगाल, पर्यटन विभाग द्वारा वर्ष 1971 में पर्यटन विभाग, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल द्वारा सम्मानित किया गया। वर्ष 1976 में संस्कृति विभाग द्वारा गीत और नाटक इकाई, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 1985 में पशुपति कला मंदिर, नई दिल्ली द्वारा भी सम्मानित किया गया है। वर्ष 2004 में, श्री सिंह को राज्य प्रदूषण बोर्ड सिक्किम सरकार द्वारा भी सम्मानित किया गया है। सांस्कृतिक मामलों के विभाग, मुंबई, महाराष्ट्र द्वारा वर्ष 1982 में सम्मानित किया गया। वर्ष 1998 में सिक्किम साहित्य परिषद द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2005 में सिक्किम कलाकर संघ और वर्ष 2019 में मास्टर मित्रसेन थापा पुरस्कार से गोरखालैंड प्रादेशिक प्रशासन, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल द्वारा भी सम्मानित किया गया है।